भारत की लोक कथाऐं

आसाम

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Assam Ki Lok Kathayen (Folktales of Assam, India)
Cover Page Picture : Tea Gardens of Assam
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Assam, India

विंडसर, कैनेडा
फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
भारत की लोक कथाऐं–आसाम 5
1 एक बिल्ले और एक मुर्गी की कहानी 7
2 कुत्ते और बकरे की कहानी 12
3 कछुए और बन्दरों की कहानी 14
5 साही और हिरन की कहानी 24
6 एक आदमी और बन्दर 31
7 लड़की जिसने बन्दर से शादी की 35
8 जादूगर नर 39

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

भारत की लोक कथाऐं–आसाम

इस सीरीज़ में, यानी "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ में, भारत की लोक कथाऐं प्रकाशित करने का कोई इरादा नहीं था। पर मुझे आसाम में कही सुनी जाने वाली कुछ लोक कथाऐं अंग्रेजी में लिखी मिल गयीं। इनको देख कर मुझे लगा कि शायद भारत के बहुत सारे प्रान्तों की बहुत सारी लोक कथाऐं, खास करके उन प्रान्तों की लोक कथाओं को जहॉ हिन्दी नहीं बोली जाती जैसे आसाम, बंगाल, उड़ीसा और दक्षिण भारत के चार प्रान्त आन्ध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और पश्चिम में गुजरात, अपने हिन्दी भाषा भाषी बच्चे नहीं जान पायेंगे।

सो इसके लिये मुझे जो लोक कथा कहीं भी दिखायी दे गयीं मैंने उनको वहॉ से ले कर हिन्दी में लिख दिया है। अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस "ज्ञान दान" प्रोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है।

दुनियॉ के सात महाद्वीपों में से एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा है।इस महाद्वीप को जनसंख्या में बड़ा बनाते हैं चीन और भारत देश। भारत देश की जनसंख्या चीन देश से दूसरे नम्बर पर आती है। और क्षेत्रफल में बड़ा बनाते हैं रूस और चीन देश। भारत में भी इतने सारे तरह के लोग रहते हैं कि कहते हैं कि यहॉ हर सौ मील की दूरी पर खाना पीना. रहन सहन, भाषा आदि बदल जाते हैं, फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या।

इस पुस्तक में हम तुम्हें इसी देश के उत्तरी–पूर्वी हिस्से की, यानी आसाम की तरफ की, लखेर जनजाति की कुछ लोक कथाऐं प्रस्तुत कर रहे हैं। लखेर जनजाति भारत के उत्तरी–पूर्वी भाग की एक जनजाति है जो कई जगहों पर पायी जाती है जैसे मिजोरम, आसाम, बर्मा का चिन प्रान्त आदि।[1]

अधिकतर ये लोग शिकारी होते हैं और मछलियॉ पकड़ते हैं। कुछ लोग चावल उगाते हैं, खाने के लिये फूल और कई तरह के बॉस उगाते हैं। वस्तुऐं दे कर वस्तुऐं खरीदते हैं। बलिदान इनके यहॉ की एक मुख्य धार्मिक प्रथा है। यहॉ उन्हीं लोगों की कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं।

तो लो पढ़ो ये लोक कथाऐं भारत के ऐसे प्रान्तों की जहॉ हिन्दी नहीं बोली जाती।

---

[1] These stories have been translated from "Lakher Folklore" by NE Parry in the book written in "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

लखेर जनजाति

लखेर जनजाति भारत के उत्तरी–पूर्वी भाग की एक जनजाति है जो कई जगहों पर पायी जाती है जैसे मिजोरम, आसाम़, बर्मा का चिन प्रान्त आदि। यह जनजाति साधारणतया प्रकृति की गोद में रहना पसन्द करती है जहॉ बहुत सारे फूल हों, पेड़ हों, पहाड़ियॉ हों, नदियॉ हों। इनकी भाषा मारा–चिन है। इनके शुरू होने की कहानी भी बड़ी अजीब है। कहते हैं कि ये उत्तर में चिन पहाड़ियों की किसी जगह से आते हैं। इनका समाज छह भागों मे बॅटा हुआ है और हर भाग में भी कई कई समूह हैं।

इनके यहॉ लड़के और लड़कियों में शादी से पहले ही यौन सम्बन्ध हो जाते हैं पर ये लोग शादी जरूर करते हैं क्योंकि उसको ये जीवन की एक मुख्य घटना मानते हैं। लड़के बीस पच्चीस साल की उम्र में और लड़कियॉ बीस साल की उम्र से पहले ही शादी कर लेती हैं। लड़कों के लिये उनके माता पिता ही लड़की चुनते है और वे साधारणतया एक पत्नी के साथ ही रहते हैं। लड़के वाले लड़की वालों को शादी से पहले कुछ धन देते है जिसे वधू मूल्य[2] कहते हैं।

अधिकतर ये लोग शिकारी होते हैं और मछलियॉ पकड़ते हैं। कुछ लोग चावल उगाते हैं, खाने के लिये फूल और कई तरह के बॉस उगाते हैं। ये लोग वस्तुऍ दे कर वस्तुऍ खरीदते हैं और बलिदान इनके यहॉ की एक मुख्य धार्मिक प्रथा है।

यहॉ वहॉ की कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं। ये कथाऐं वहॉ बहुत प्रचलित है। इनमें बहुत सारी कहानियॉ तो जानवरों की हैं पर इनमें एक कहानी "जादूगर नर" मेरी लिखी पढ़ी सारी लोक कथाओं में एक अकेली ऐसी कहानी है जिस में चीता आदमी का जिक्र आता है।

[2] Translated for the words "Bride Price".

1 एक बिल्ले और एक मुर्गी की कहानी[3]

एक बार एक जंगली बिल्ले ने एक मुर्गी से दोस्ती करने का बहाना किया पर सच तो यह था कि वह उस मुर्गी को खाना चाहता था।

एक दिन बिल्ले ने मुर्गी से पूछा — "ओ मुर्गी, आज रात तुम कहॉ सोओगी?"

मुर्गी बोली — "आज मैं अपनी टोकरी में सोऊॅगी।"

मगर जब रात हुई तो वह मुर्गी अपनी टोकरी में नहीं सोयी बल्कि वह वहॉ सोयी जहॉ बगीचे में पानी देने वाला पाइप रखा जाता है। जब रात हुई तो बिल्ला मुर्गी को उसकी टोकरी में ढूॅढने आया पर वह तो वहॉ थी नहीं सो वह घर वापस लौट गया।

अगले दिन बिल्ला जब मुर्गी से मिला तो उसने उससे पूछा — "कल रात तुम कहॉ सोयीं थीं?"

मुर्गी बोली — "मैं तो कल रात जहॉ पानी देने वाला पाइप रखा रहता है वहॉ सोयी थी।"

बिल्ले ने फिर पूछा — "तुम आज रात कहॉ सोओगी?"

मुर्गी बोली — "मैं आज रात जहॉ पानी देने वाले पाइप रखे रहते हैं वहीं सोऊॅगी क्योंकि वहॉ मैंने अपने अंडे दिये हुए हैं।"

[3] Story of a Cat and a Hen – a folktale of Lakher Tribe of North-Eastern part of India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

पर उस रात वह वहॉ नहीं सोयी, वह तो अपनी टोकरी में सोयी।

बिल्ला रात को जहॉ पानी देने वाले पाइप रखे रहते हैं वहॉ मुर्गी को ढूँढने गया लेकिन उसको मुर्गी वहॉ नहीं मिली। मुर्गी को वहॉ न पा कर बिल्ले को बहुत गुस्सा आया और गुस्से में भरा हुआ वह घर वापस लौट गया।

अगले दिन बिल्ला जब मुर्गी से मिला तो उसने उससे फिर पूछा — "कल रात तुम कहॉ सोयीं थीं?"

मुर्गी बोली — "अपनी टोकरी में।"

बिल्ले ने पूछा — "और तुम आज रात कहॉ सोओगी?"

मुर्गी बोली वहीं अपनी टोकरी में।"

मगर जब शाम हुई तो मुर्गी पानी देने वाले पाइप रखने वाली जगह पर सोयी।

इस बार जब रात हुई तो बिल्ला मुर्गी को उसकी टोकरी में ढूँढने गया पर मुर्गी उसको वहॉ नहीं मिली सो वह उसको पाइप रखने वाली जगह पर देखने गया। वहॉ वह उसको मिल गयी। उसने उसको मार दिया और उसके शरीर को ले कर चल दिया।

उस मुर्गी ने दस अंडे दिये थे। जब उन अंडों ने देखा कि बिल्ले ने उनकी मॉ को मार दिया है तो उन्होंने बिल्ले से अपनी मॉ की मौत का बदला लेने का विचार किया।

सो उन्होंने अपनी पानी देने वाले पाइप की जगह छोड़ दी और कहीं दूसरी जगह चल दिये। जब वे सब उस जगह को छोड़ कर जा रहे थे तो केवल एक अंडे को छोड़ कर सारे अंडे टूट गये। यह बचा हुआ अंडा उन सब अंडों में सबसे छोटा अंडा था सो यह अंडा अकेला ही चल पड़ा।

जब वह जा रहा था तो उसको रास्ते में ठंड की आत्मा[4] मिली। उसने अंडे से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

अंडे ने सोच रखा था कि वह बिल्ले से अपनी माँ की हत्या का अकेला ही बदला लेगा सो जब वह ठंड की आत्मा से सड़क पर मिला और उस आत्मा ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था तो वह बोला — "मैं किसी खास जगह नहीं जा रहा।"

ठंड की आत्मा बोली — "मुझे मालूम है कि तुम बिल्ले से अपनी माँ की हत्या का बदला लेने जा रहे हो। चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ हो सकता है तुम्हें मेरी जरूरत पड़ जाये।" सो वह ठंड की आत्मा उसके साथ हो ली।

थोड़ी दूर जाने पर उनको एक चूहा पकड़ने वाला चूहेदान मिल गया। उसने भी ठंड की आत्मा और अंडे से पूछा कि वे लोग कहाँ जा रहे थे।

[4] Translated for the words "Spirit of the Cold"

अंडा तो कुछ नहीं बोला पर ठंड की आत्मा ने उसको सब कुछ बता दिया। यह सुन कर चूहेदान बोला — "मैं भी आप लोगों के साथ चलता हूँ शायद मैं भी आप लोगों के कुछ काम आ जाऊँ।"

सो वह भी उन लोगों के साथ हो लिया।

कुछ दूर आगे जा कर उनको एक मूसल मिला, फिर एक लाल चींटा मिला, फिर भूसा मिला और फिर एक मकड़ा मिला। सबने अंडे के साथ जाने का विचार किया और वे सभी उसके साथ हो लिये।

जल्दी ही वे सब उस जंगली बिल्ले के घर पहुँच गये जिसने उस अंडे की माँ मुर्गी को खाया था। परन्तु बिल्ला उस समय वहाँ नहीं था वह अपने खेत पर गया हुआ था।

सो ठंड की आत्मा बिल्ले के खेत पर पहुँची। वहाँ जा कर उसने देखा कि बिल्ला तो अपने खेत की जंगली घास उखाड़ रहा था। ठंड की आत्मा ने अपनी ठंड का असर फैलाया तो वह बिल्ला ठंड से काँपने लगा।

जब ठंड की आत्मा बिल्ले को ठंड से कँपकँपा रही थी तब चूहेदान आदि सभी बिल्ले के घर में थे। मूसल बिल्ले के घर के दरवाजे के ऊपर था। अंडा अन्दर आग के पास चला गया। लाल चींटा और भूसा भी अंडे के पास ही फर्श पर बैठ गये। मकड़ा दीवार पर चढ़ गया।

बिल्ले को जब ठंड लगने लगी तो वह घर वापस आ गया। उसको बहुत ज़्यादा ठंड लग रही थी सो वह आग के पास आ कर बैठ गया।

उधर आग की गरमी से अंडा टूट गया। उस अंडे के टूटने की आवाज इतनी ज़्यादा हुई कि बिल्ला डर गया और भूसे के ऊपर जा पड़ा। तभी लाल चींटे ने जो वहीं बैठा था बिल्ले को काट लिया।

बिल्ला वहॉ से फिर हटा और जहॉ लाल चींटे ने उसे काटा था उस जगह को दीवार से रगड़ने लगा। लेकिन वहॉ तो वह मकड़ा बैठा था सो उसने उसको काट लिया।

बिल्ले को लगा कि जरूर कहीं कुछ गड़बड़ है।

अब बिल्ले ने घर छोड़ कर जाने का फैसला किया पर जैसे ही वह घर से बाहर निकला मूसल उसके सिर पर गिर पड़ा। बिल्ले को चोट तो बहुत आयी पर फिर भी इन सबसे बचने के लिये वह घर के नीचे की ओर चल पड़ा।

वहॉ चूहादान बैठा हुआ था। जैसे ही बिल्ला उसके पास से निकला चूहेदान ने उसको इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह तो मर ही गया।

इस प्रकार अंडे ने बिल्ले से अपनी मॉ की हत्या का बदला लिया

2 कुत्ते और बकरे की कहानी[5]

यह बहुत पुरानी बात है। उन दिनों की जब कुत्तों के भी सींग हुआ करते थे। एक दिन एक स्त्री ओखली में मॉस कूट रही थी। जब वह मॉस कूट चुकी तो एक कुत्ता आया और ओखली में लगा मॉस चाटने लगा।

पर उसको लगा कि वह अपने सींगों की वजह से मॉस ठीक से नहीं चाट पा रहा है सो उसने अपने सींग निकाल कर रख दिये और फिर से ओखली में लगा मॉस चाटने लगा। अब वह आसानी से मॉस चाट पा रहा था।

इतने में उधर से एक बकरा गुजरा। उसने सींग रखे देखे तो वे उसे बहुत अच्छे लगे और उसने उन्हें अपने सिर पर लगा लिये और चल दिया।

कुत्ता जब मॉस चाट चुका तो उसने अपने सींग देखे कि वह उनको अपने सिर पर लगा ले पर उसको तो अपने सींग ही कहीं दिखायी नहीं दिये। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि एक बकरा उसके सींग अपने सिर पर लगाये भागा जा रहा है।

[5] Story of a Dog and a Goat – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia.
Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

कुत्ते ने उससे अपने सींग लेने के लिये उसका पीछा किया परन्तु बकरा तो तब तक भाग चुका था। कुत्ता उसको पकड़ ही नहीं पाया। उस दिन से कुत्ते के सींग तो उसके सिर से चले गये और बकरे के सिर पर उसके सींग लग गये।

अब कुत्ता बकरे को देखते ही भौंकता है क्योंकि वह जानता है कि बकरे ने उसके सींग चुराये हैं। वह उनको फिर से लेने की कोशिश करता है पर वह उसके हाथ ही नहीं आता।

3 कछुए और बन्दरों की कहानी[6]

बहुत दिन पहले की बात है कि एक बार एक कछुआ एक अजनबी शहर में नमक खरीदने गया।

जब वह नमक खरीद कर वापस लौट रहा था तो उसने देखा कि बहुत सारे बन्दर एक पेड़ पर चढ़े फल खा रहे थे। उन फलों के देख कर उसके मुँह में पानी आ गया सो उसने उन बन्दरों से कुछ फल माँगे।

बन्दरों ने उसको कुछ फल तोड़ कर नीचे फेंक दिये। कछुए ने वे फल खाये तो उसको वे बहुत मीठे लगे सो कछुए ने उनको कुछ और फल फेंकने के लिये कहा तो बन्दरों ने जवाब दिया कि अगर वह और फल खाना चाहता है तो वह पेड़ पर चढ़े और अपने आप फल तोड़ कर खाये। वे अब उसको और फल नीचे नहीं फेंकेंगे।

कछुआ बोला कि वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता इसलिये अगर बन्दर उसके लिये फल नीचे फेंक दें तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी।

[6] Story of a Tortoise and Monkeys – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

इस पर बन्दर बोले कि अगर वह खुद पेड़ पर नहीं चढ़ सकता तो कोई बात नहीं। वह अगर चाहे तो वे उसको उठा कर पेड़ के ऊपर ला सकते थे। कछुआ राजी हो गया।

इस पर कुछ बन्दर पेड़ से नीचे उतरे और उस कछुए को उठा कर ऊपर पेड़ के ऊपर बिठा दिया। वहॉ बैठ कर सबने खूब फल खाये।

जब बन्दर फल खा चुके तो वे कछुए को बिना बताये और उसको नीचे लाये बिना ही पेड़ पर से नीचे उतर आये। उन्होंने कछुए का नमक भी उठा लिया और उसको ले कर वहॉ से चले गये।

जब कछुए ने देखा कि वह पेड़ पर अकेला ही रह गया तो वह रोने लगा। उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं हुई कि वह पेड़ पर से कूद पड़े।

डर के मारे उसका रोना बढ़ गया और वह इतना रोया इतना रोया कि उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे और नाक से पानी। यह सब भी इतना बहा कि पेड़ की जड़ के पास एक छोटा सा नाला बन गया।

उसी समय वहॉ एक प्यासा हिरन आया और उसने उस नाले में से पानी पिया तो बोला — "ओह कितना अच्छा पानी है इस नाले का।"

कछुआ यह सुनते ही तुरन्त बोला — "यह नाला नहीं है यह तो मेरे ऑसू हैं।"

फिर उसने हिरन को बताया कि वह क्यों रो रहा था। कछुए की कहानी सुन कर हिरन ने कहा — "कछुए भाई, तुम मेरी कमर पर कूद जाओ। मैं तुमको अपनी कमर पर ले सकता हूँ।"

कछुआ बोला — "तुम्हारी कमर तो केवल चार अंगुल चौड़ी है मुझे उस पर कूदने में डर लगता है।" और कछुआ हिरन की कमर पर नहीं कूदा।

उसी समय वहॉ पर एक बारहसिंगा आया। उसने भी उस नाले का पानी पिया और उस पानी की बड़ी तारीफ की। कछुआ फिर बोला — "यह नाले का पानी नहीं है यह तो मेरे ऑसू हैं।"

फिर उसने बारहसिंगे को भी बताया कि वह क्यों रो रहा था। बारहसिंगा भी बोला — "आओ कछुए भाई, तुम चिन्ता न करो तुम मेरी कमर पर कूद जाओ।"

कछुआ बोला — "तुम्हारी कमर तो केवल दो हाथ चौड़ी है मुझे उस पर कूदने में डर लगता है।" सो कछुआ बारहसिंगे की कमर पर भी नहीं कूदा।

तभी वहॉ से एक हाथी गुजरा। उसने भी उस नाले का पानी पिया और नाले के पानी की बहुत तारीफ की। कछुआ फिर बोला — "हाथी भाई, यह नाले का पानी नहीं है यह तो मेरे ऑसू हैं।" फिर उसने हाथी को भी बताया कि वह क्यों रो रहा था।

कछुए की दुखभरी कहानी सुन कर हाथी भी दुखी हो गया। उसने भी कछुए से कहा — "कछुए भाई, मेरी पीठ तो बहुत बड़ी है तुम मेरी पीठ पर कूद जाओ। तुम यहाँ आराम से कूद सकते हो।"

कछुए को भी लगा कि वह हाथी की पीठ पर आराम से कूद सकता है सो वह हाथी की पीठ पर कूद गया।

अब क्योंकि कछुआ हाथी की रीढ़ की हड्डी पर कूदा था सो उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गयी और वह मर गया। कछुए ने पेट भर कर हाथी का मॉस खाया और फिर बन्दरों से बदला लेने के लिये बन्दरों के गॉव की ओर चल दिया।

कुछ ही देर में कछुआ बन्दरों के खेतों के पास आ पहुँचा। वहाँ जा कर उसने टट्टी की और आगे बढ़ गया। कुछ देर के बाद बन्दर वहाँ आये उन्होंने समझा कि वह मॉस पड़ा था सो वे उसे सब का सब खा गये।

कछुआ यह सब देख रहा था। वह बोला — "कुछ देर पहले ही तो तुम लोग मुझे पेड़ पर छोड़ आये थे और अब तुमने मेरी टट्टी खा ली?"

बन्दरों ने जब यह सुना तो उनको बड़ा गुस्सा आया। वे लोग कछुए के घर के पास पहुँचे और वहाँ टट्टी करके एक टोकरी में छिप कर बैठ गये।

कुछ देर बाद कछुआ अपने घर से बाहर निकला तो उसने अपने घर के बाहर बन्दरों की टट्टी देखी तो वह बन्दरों को ढूँढने लगा। उसने सोचा कि बन्दर भी यहीं कहीं पास में ही छिपे होंगे।

उसने बन्दरों को ढूँढा तो देखा कि सारे बन्दर एक टोकरी में छिपे बैठे हैं उसने उन सारे बन्दरों को उसी टोकरी से बाँध दिया और उस टोकरी को नीचे लुढ़का दिया।

सारे बन्दर मर गये केवल एक बँदरिया को छोड़ कर। असल में उस बँदरिया ने गिरते समय एक बेल को पकड़ लिया था। वह बँदरिया गर्भवती थी।

कहते हैं कि आज जितने भी बन्दर दुनियाँ में मौजूद हैं हैं वे सब उसी बँदरिया की सन्तान हैं।

4 एक विधवा और उसका बेटा[7]

बहुत दिन पहले की बात है कि एक विधवा स्त्री अपने एकलौते बेटे के साथ रहती थी। एक दिन वह बेटा एक नाले की ओर गया और वहॉ से एक मछली पकड़ लाया। घर आ कर उसने वह मछली पकाने के लिये मॉ को दे दी।

उस मछली को देख कर मॉ बहुत खुश हुई और तुरन्त ही उसने उसको एक बड़े बरतन में पानी भर कर उबालने के लिये आग पर रख दिया। जब पानी में उबाल आया तो वह मछली पानी में इधर उधर नाचने लगी और उसे ऐसा लगा जैसे उस पानी में एक नहीं कई मछलियॉ हों।

उस स्त्री ने देखा तो बोली — "इनमें से एक मेरी है और एक मेरे बेटे की, एक मेरी है और एक मेरे बेटे की, एक मेरी है और एक मेरे बेटे की। इस तरह हम लोग पॉच पॉच मछलियॉ खायेंगे।"

इतना कह कर उसने बरतन में से एक मछली निकाली और खा ली। खाने के बाद उसने बरतन में झॉका तो यह देख कर वह बहुत दुखी हुई कि उसमें तो अब एक भी मछली नहीं थी।

उसी समय उसका बेटा घर आ गया और मॉ से बोला — "मॉ, बहुत ज़ोर से भूख लगी है आओ खाना खा लें।"

---

[7] A Widow and Her Son – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia.
Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

मॉ खाना तो ले आयी पर बेटे को उसमें वह मछली कहीं दिखायी नहीं दी जो वह पकड़ कर लाया था सो उसने मॉ से पूछा — "मॉ, उस मछली का क्या हुआ जो मैं ले कर आया था?"

मॉ ने उसे बताया कि वह तो उसने खा ली। यह सुन कर बेटा बहुत दुखी हुआ कि अब वह खाने के साथ मॉस नहीं खा सकेगा।

उसकी मॉ भी बहुत दुखी थी। कुछ ही देर में उसको एक तरकीब सूझी। वह उठी, उसने एक लाल रंग का बीज लिया और उसको मोम से अपने पिछवाड़े पर चिपका कर एक नदी की ओर चल दी जहॉ जंगली जानवर पानी पीने आया करते थे। उस नदी पर पहुॅच कर वह नीचे झुक कर पानी पीने लगी।

तभी एक हिरन वहॉ पानी पीने आया पर वह उस लाल रंग के बीज को देख कर डर के मारे भाग गया।

रास्ते में उसको एक बारहसिंगा मिला तो उसने उसको बताया कि आज नदी पर उसने क्या देखा पर बारहसिंगे को हिरन की बातों पर विश्वास नहीं हुआ सो हिरन उसको वह दिखाने के लिये नदी की तरफ ले गया।

अब लाल बीज तो वहीं का वहीं था सो उसको देख कर वह बारहसिंगा भी डर गया और वे दोनों ही वहॉ से भाग लिये।

जल्दी ही दूसरे जानवर – जंगली सूअर, भालू, चीते, बन्दर, हाथी आदि भी वहॉ पानी पीने आये पर वे सब भी उस लाल बीज को देख कर डर गये और भाग गये।

जब वे लाल बीज के डर की वजह से पानी नहीं पी सके तो उन सबने मिल कर एक मीटिंग की कि उस लाल बीज का क्या करना चाहिये जो उस स्त्री ने अपने पिछवाड़े पर चिपका रखा था।

तय यह हुआ कि बन्दर वहॉ जाये और उस लाल बीज को उस स्त्री के पिछवाड़े से हटाये।

सो बन्दर धीरे धीरे उस स्त्री के पीछे गया और जैसे ही उसने उस लाल बीज को उसके पिछवाड़े से हटाने की कोशिश की कि उसका हाथ उसके पिछवाड़े से चिपक गया। वह डर के मारे चिल्ला पड़ा।

उसकी चीख सुन कर दूसरे जानवर भी डर गये और इधर उधर भागने लगे।

इतने में एक हाथी उसी तरफ आ रहा था। सबको भागता हुआ देख कर वह भी दौड़ पड़ा। कई जानवर इस भागा दौड़ी में मारे गये और कई जानवर उस हाथी के पैरों के नीचे आ कर मर गये।

उधर भागते समय हाथी का पैर एक बड़े पेड़ की जड़ में फॅस गया जिससे उसकी टॉग टूट गयी और वह भी गिर कर मर गया।

वह स्त्री घर गयी और अपने पड़ोसियों को बुला लायी। सब लोगों ने मिल कर मरे हुए जानवरों के मॉस की खूब दावत उड़ायी।

वह सब मॉस इतना ज़्यादा था कि आदमियों ने भी खूब खाया और जानवरों ने भी खूब खाया पर फिर भी वह बच रहा। यह देख

कर जानवरों ने यह विचार किया कि बाकी का बचा हुआ मॉस सब जानवरों में बॉट दिया जाये। हाथी की टॉग उमर में सबसे बड़े जानवर को मिलेगी।

काफी सोच विचार के बाद यह पाया गया कि उन सब जानवरों में सबसे छोटा छंगबई चूहा उमर में सबसे बड़ा था सो हाथी की टॉग उसको दे दी गयी।

चूहे को हाथी की टॉग तो मिल गयी पर हाथी की टॉग के मुकाबले में तो वह चूहा बहुत ही छोटा था वह उसको ले कर कैसे जाता?

अब क्योंकि वह उसको अकेले उठा कर नहीं ले जा सकता था सो उसने अपने बहिन के बेटे ज़बी[8] को अपनी सहायता के लिये बुलाया।

लेकिन वह टॉग तो इतनी भारी थी कि वे दोनों मिल कर भी उसको नहीं उठा सके। बल्कि इस सब मेहनत में छंगबई के पेट में से हवा और निकल गयी – पूँ ऊँ ऊँ। हवा निकलने की आवाज सुन कर उसका भतीजा ज़बी खूब हॅसा, खूब हॅसा।

ज़बी को हॅसता देख कर छंगबई को इतना अधिक गुस्सा आया कि उसने उसके पिछवाड़े पर एक ज़ोर का हाथ मारा। बेचारा ज़बी गिरते गिरते बचा।

[8] Zabee – name of the Chhangbai mouse's nephew

फिर उसने हाथी की टॉग के पास ही एक गड्ढा खोद कर अपना बिल बनाया और वहीं रहने का विचार किया। वह हाथी की टॉग बहुत दिनों तक खाता रहा।

कहते हैं कि छंगबई की हवा निकलने पर ज़बी इतना हॅसा इतना हॅसा कि उस हॅसने से उसकी ऑखें बहुत छोटी हो गयीं और उसका पिछवाड़ा भी उसके सिर के मुकाबले में बहुत छोटा हो गया था क्योंकि छंगबई ने उसको वहॉ बहुत ज़ोर से मारा था।

5 साही और हिरन की कहानी[9]

बहुत दिन पहले की बात है कि एक दिन एक साही[10] और एक हिरन दोनों अपना अपना झूम[11] यानी खेत बनाने के लिये एक पेड़ की जड़ें काट रहे थे।

साही उस पेड़ की जड़ को बड़ी सॅभाल कर धीरे धीरे अपने दॉतों से काट रहा था और हिरन उसको अपने अगले पैरों के नीचे के हिस्से से काट रहा था।

फिर उन्होंने अपने अपने खेत जला कर तैयार कर लिये तो साही का खेत तो बहुत अच्छा जल गया क्योंकि उसने बड़ी मेहनत से अपना खेत काटा था पर हिरन का खेत उतना अच्छा नहीं जला क्योंकि वह बहुत आलसी और लापरवाह था।

जब चावल बोने का समय आया तो हिरन ने साही के खेत में अपने चावल बो दिये। यह देख कर साही बोला — "तुमने मेरे खेत में अपने चावल क्यों बोये?"

---

[9] Story of a Hedgehog and Deer – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

[10] Translated for the word "Hedgehog". Saahee word is a Hindi word is for hedgehog or porcupine. See its picture above.

[11] Jhoom word is used for farm.

इस पर हिरन बोला — "मैंने अपना बीज अपने खेत में बोया है तुम्हारा खेत में नहीं। तुम्हारा खेत ठीक नहीं है।" वे दोनों इसी बात पर काफी देर तक बहस करते रहे कि कौन सा खेत किसका है।

अन्त में हिरन ने कहा इस प्रकार लड़ने से कोई फायदा नहीं है इससे अच्छा है कि कुश्ती लड़ते हैं और जो भी कुश्ती में जीतेगा अच्छा वाला खेत उसी का होगा। साही यह सोच कर राजी हो गया कि यद्यपि वह साइज़ में छोटा था फिर भी वह जीत जायेगा और अच्छा वाला खेत उसे मिल ही जायेगा।

सो दोनों की कुश्ती शुरू हुई और साही जीत गया। इस पर हिरन दुखी आवाज में बोला कि पहली कुश्ती में उसकी हड्डियॉ दर्द कर रही थीं इसलिये वह पहली बार की कुश्ती ठीक से नहीं लड़ पाया इसलिये अब वह दोबारा कुश्ती लड़ना चाहता है।

साही राजी हो गया। हिरन ने अपनी हड्डी पर एक कपड़ा लपेट लिया और दोबारा कुश्ती लड़ा पर इस बार भी साही जीत गया।

हिरन बोला कि दूसरी कुश्ती लड़ते समय क्योंकि उसकी गरदन में दर्द था इसलिये वह यह दूसरी कुश्ती हार गया था इसलिये अब तीसरी बार कुश्ती होनी चाहिये तब फैसला होगा। साही तीसरी बार के लिये भी तैयार हो गया पर इत्तफाक से साही तीसरी बार भी जीत गया।

यह देख कर हिरन को थोड़ा दुख तो हुआ पर वह अभी भी हार मानने के लिये तैयार नहीं था सो उसने एक और सलाह दी।

वह बोला — "ऐसा करते हैं कि अबकी बार हम अपने अपने दोस्तों को बुला लेते हैं और फिर लड़ाई लड़ें और फिर जो जीते अच्छा वाला खेत उसका।" साही इस पर भी राजी हो गया।

हिरन ने तो अपने बहुत सारे दोस्तों को बुला लिया पर साही का कोई दोस्त न था। इस प्रकार हिरन की तरफ तो बहुत सारे जानवर थे मगर साही की तरफ कोई भी नहीं था सो उसने किसी तरह मधुमक्खियों को अपनी तरफ कर लिया।

उसने उन मधुमक्खियों को बीयर के कुछ बरतनों में बन्द कर दिया और उन बरतनों को एक अलमारी के ऊपर रख दिया।

थोड़ी देर में हिरन का भेजा एक बन्दर आया और उसने साही से पूछा कि क्या वह हिरन को उसका खेत देने के लिये तैयार है? साही ने हिरन को खेत देने से तो साफ इनकार कर दिया पर उसने बन्दर को एक प्याला बहुत बढ़िया शहद पीने के लिये दिया।

शहद पी कर तो बन्दर बहुत ही खुश हुआ और उसने साही से वायदा किया कि वह उन दोनों के बीच सुलह और शान्ति करवाने की कोशिश करेगा।

बन्दर शहद पी कर वापस चला गया और हिरन को अपनी साही से मुलाकात की कहानी सुनायी। यह कहानी सुन कर हिरन ने तुरन्त ही अपना एक और दूत साही के पास इस सन्देश के साथ

भेजा कि वह आखिरी बार उससे पूछ रहा है कि साही अपना खेत छोड़ने के लिये राजी था कि नहीं?

इस बार साही ने सारे जानवरों को अपने आपसे लड़ने की चुनौती दी पर उसने साथ में यह भी कहा कि वह सारे जानवरों को अपने आपसे लड़ने से पहले अपने घर में बीयर[12] पिलायेगा।

सारे जानवर यह सुन कर बहुत खुश हुए और उसके घर में बीयर पीने आये तो उसने सबको अपने घर में अन्दर बुलाया और जब वे सब अन्दर आ गये तो उसने घर का दरवाजा बन्द कर दिया।

फिर वह बन्दर से बोला — "तुम सबसे पहले हिरन के दूत बन कर आये थे इसलिये सबसे पहले मैं बीयर तुम्हें ही दूँगा। जाओ और जा कर बीयर का एक बरतन खोलो और उसमें अपना सिर डाल कर उसमें से बीयर की पहली खुशबू सूँघो कहीं ऐसा न हो कि वह निकल जाये।"

ऐसा कह कर वह खुद अलमारी के ऊपर चढ़ गया।

बन्दर ने खुशी खुशी बीयर का एक बरतन खोला और बीयर सूँघने के लिये उसमें अपना सिर डाला ही था कि उसमें से बहुत सारी मधुमक्खियाँ निकल पड़ीं। उन्होंने उसके सारे शरीर पर काट लिया और वह तुरन्त ही मर गया।

[12] Beer is a kind of liquor. It is very light.

साही यह देख कर अपने उस छेद से घर के बाहर भाग गया जो उसने अपने घर की छत में पहले से ही बना रखा था।

फिर वे मधुमक्खियॉ सारे कमरे में फैल गयीं और उन्होंने दूसरे जानवरों को भी काटना शुरू कर दिया। यह देख कर वे जानवर पागल से हो गये और इधर उधर भागने लगे। पर क्योंकि साही के घर का दरवाजा बन्द था इसलिये कोई जानवर वहॉ से बाहर नहीं भाग पाया।

इधर उधर भागने के चक्कर में वे आलमारी से टकरा गये और अलमारी पर रखे बीयर के दूसरे बरतन भी खुल गये। उनमें से भी बहुत सारी मधुमक्खियॉ निकल पड़ीं और जानवरों को काटने लगीं। इस तरह उनमें से बहुत सारे जानवर बहुत जल्दी ही मर गये।

जब साही ने देखा कि सारे जानवर मर गये सिवाय एक कछुए के तो वह घर के अन्दर आ गया और उसने उस कछुए की पीठ को जानवरों का मॉस काटने के लिये मेज की तरह इस्तेमाल किया।

मॉस काटने के बाद वह उससे बोला — "ओ कछुए, मैं तुमको अपना एक पुराना वाला कॉटा दूँगा और फिर तुम अपने घर चले जाना।"

साही ने कछुए को अपना एक पुराना कॉटा दिया, कछुए ने उसे अपने बालों में रख लिया और अपने घर चला गया।

जब वह अपने घर जा रहा था तो एक चीते और एक भालू के घर के पास उसने एक पेड़ के खोखले तने से एक आवाज

निकाली। उस आवाज को सुन कर चीते की पत्नी और भालू की पत्नी अपने अपने घरों से बाहर आ गयीं।

चीते की पत्नी और भालू की पत्नी ने कछुए से पूछा — "कछुए भाई, हमारे पति कहॉ हैं? वे तुम्हारे साथ क्यों नहीं आये?"

कछुआ बोला — "वे सब मर गये। यहॉ तक कि साही भी मर गया। मैं अकेला ही बचा हूॅ। देखो, निशानी के तौर पर मैं साही का एक कॉटा भी लाया हूॅ।"

पर चीते और भालू दोनों की पत्नियों को उस पर विश्वास ही नहीं हुआ कि साही मर सकता है सो वे दोनों साही के पास दौड़ी गयीं। वहॉ जा कर उन्होंने साही से पूछा — "क्या कछुए ने तुम्हें मार डाला?"

साही बड़ी ज़ोर से हॅसा और हॅस कर बोला — "अरे अगर मैं मर गया होता तो क्या तुम्हारे सामने ऐसे खड़ा होता? नहीं नहीं मैं मरा नहीं हूॅ, देखो, मैं तो ज़िन्दा हूॅ।"

"तो फिर उसके पास तुम्हारा कॉटा कहॉ से आया?"

साही बोला — "वह कॉटा तो मैंने उसे अपने आप ही दिया था न कि उसने मुझसे लिया था। उसको वह अपने बालों में लगा कर ले गया।

और उसकी पीठ पर रख कर तो मैंने मॉस काटा था। अगर तुम लोग ठीक से देखोगी तो तुम्हें उसकी पीठ पर मेरे मॉस काटने के निशान भी दिखायी दे जायेंगे।"

चीते की पत्नी और भालू की पत्नी दोनों तुरन्त ही अपने घर वापस आयीं और उन्होंने कछुए की पीठ देखी तो सचमुच ही उस की पीठ पर जानवरों के मॉस काटने के निशान थे।

वे दोनों कछुए से बहुत नाराज हुई और बोलीं — "तुमने हम को धोखा दिया है।" और यह कह कर उसको पकड़ कर एक पेड़ में रख दिया।

इससे कछुए को बड़ा दर्द हुआ। वह बोला — "मुझे यहॉ बड़ा दर्द हो रहा है। तुम मेरी पूँछ पर ज़ोर से मारो और जब मेरा सिर बाहर आ जाये तो तुम मुझे खा जाना ताकि मैं मर जाऊँ।"

चीते की पत्नी और भालू की पत्नी ने ऐसा ही किया। इस तरह कछुआ तो मर गया पर आज तक कछुए की पीठ पर साही के मॉस काटे के निशान पाये जाते हैं।

6 एक आदमी और बन्दर[13]

एक दिन एक आदमी और उसकी पत्नी अपने खेत में कुछ बल्ब[14] बोने गये। कुछ बन्दर उन लोगों को बल्ब बोते देख रहे थे। उन बल्बों को देख कर उनके मुँह में पानी आ गया। वे उनको खाने का विचार करने लगे। सो उनको एक तरकीब सूझी।

उन्होंने उस आदमी से कहा — "तुम लोग इन बल्बों को ठीक से नहीं बो रहे। सबसे पहले तुम्हें इन्हें पकाना चाहिये, फिर इनको अलग अलग पत्तों में बाँधना चाहिये।

उसके बाद हर एक के पास बाँस के प्याले में पानी भर कर इनको रात भर छोड़ देना चाहिये। फिर जब सुबह तुम इनको देखने आओगे तो तुमको ये घुटनों तक लम्बे मिलेंगे।"

उस आदमी ने ऐसा ही किया जैसा कि बन्दरों ने उससे कहा था पर जब वह अगली सुबह अपने बल्ब देखने आया तो यह देख कर बहुत दुखी हुआ कि उसके सारे बल्ब गायब थे। पर उसको यह समझने में देर नहीं लगी कि यह सब उन बन्दरों की चालाकी थी। बन्दर ही उसके सारे बल्ब खा गये थे।

---

[13] A man and a Monkey – a folktale from the Lakher Tribe of Norh-Eastern part of India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

[14] There are many ways to grow a plant. Some needs seed while some are grown just by planting a branch of that plant. Some are grown by planting their bulbs, for example onions, garlic, tulips etc are grown by planting bulbs.

अब उस आदमी ने अकेले ही उन बन्दरों से बदला लेने का विचार किया। वह घर आया और सड़ी हुई पिसी हुई बीन्स अपने शरीर के ऊपर लपेट कर अपने घर के फर्श पर लेट गया जैसे मर गया हो। सड़ी हुई पिसी हुई बीन्स को शरीर पर लपेटने की वजह से उसके सारे शरीर में से बदबू आ रही थी।

उसकी पत्नी ने उसके शरीर को कुँए के पास एक ऊँचे से चबूतरे पर रख दिया और खुद उसके पास बैठ कर रोने लग गयी जैसे वह सचमुच में ही मर गया हो।

बन्दरों ने जब यह सुना कि खेत वाला आदमी मर गया है तो वह उसकी पत्नी को ढाँढस बँधाने आये।

उन बन्दरों में साइज़ में जो सबसे बड़ा बन्दर था वह रो कर बोला — "जब यह मेरा पिता ज़िन्दा था तब यह मुझको बहुत अच्छी अच्छी सब्जियाँ खाने को देता था। अब यह चला गया तो मुझे वैसी सब्जियाँ कौन खिलायेगा।"

उस आदमी की पत्नी रोते हुए बोली — "तुमने मुझसे मरने से पहले कहा था कि मेरे पास मेरा भाला रख देना।"

उस बड़े बन्दर ने जैसे ही यह सुना तो वह उस आदमी का भाला उठा लाया और उसके शरीर के पास ला कर रख दिया।

अब उस आदमी की पत्नी ने और ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया तो बन्दर ने उसके पास उसकी बन्दूक भी ला कर रख दी।

तभी उस आदमी ने थोड़ी सी ऑख खोल कर अपने चारों ओर देखा।

उन बन्दरों में एक छोटी सी बॅदरिया भी थी। वह उस समय गर्भवती थी। वह उस आदमी के शरीर के पास ही बैठी थी और बड़ी सहानुभूति से उसके बेजान शरीर को देख रही थी।

पर यह क्या? उसने देखा कि उस आदमी ने तो ऑख खोल कर अपने चारों ओर देखा। वह तुरन्त ताड़ गयी कि वह आदमी मरा नहीं था बल्कि ज़िन्दा था और मरने का नाटक कर रहा था।

उसने आदमी के ज़िन्दा होने की बात सब बन्दरों को बता दी। पर किसी बन्दर ने उस पर विश्वास नहीं किया।

बल्कि वह बड़ा बन्दर तो बोला — "पर इसके शरीर से तो कितनी बदबू आ रही है यह ज़िन्दा कैसे हो सकता है?"

पर बॅदरिया को अपनी ऑखों पर विश्वास था सो वह वहॉ से उठी और एक कूड़े वाले गड्ढे के पास जा बैठी।

अब उस आदमी की पत्नी ने रोना बन्द कर दिया था। वह बड़े बन्दर से बोली — "देखो, ज़रा दरवाजा ठीक से बन्द कर दो।"

बन्दर उठा और उसने घर का दरवाजा ठीक से बन्द कर दिया। बन्दर के दरवाजा बन्द करते ही वह आदमी उठ कर बैठा हो गया और उसने सारे बन्दरों को अपनी बन्दूक से मार दिया बस केवल वह बॅदरिया ही बची जो अपनी जान बचाने के लिये उस समय उस गड्ढे में कूद गयी थी।

आज जितने भी बन्दर इस दुनियॉ में मौजूद हैं वे सब उस बॅदरिया की ही सन्तान हैं।

7 लड़की जिसने बन्दर से शादी की[15]

एक बार की बात है कि एक लड़की नदी पर नहाने और पानी भरने गयी। उसने नहाने के लिये अपने कपड़े उतारे, उनको किनारे पर रखा और नहाने के लिये पानी में चली गयी। जब वह नहा रही थी तो एक बन्दर आया और उसके कपड़े उठा कर भाग गया।

लड़की ने बन्दर का पीछा किया और चिल्ला कर बोली — "ओ बन्दर, रुक जाओ, मेरे कपड़े वापस करो।"

बन्दर बोला — "अगर तुम मुझसे शादी करोगी तभी मैं तुम्हारे कपड़े वापस करूँगा।"

लड़की यह सुन कर हैरान रह गयी। वह बोली — "यह तुम क्या कह रहे हो? मैं तुमसे शादी कैसे कर सकती हूँ? मैं एक लड़की हूँ और तुम बन्दर।"

बन्दर बोला — "ठीक है। मत करो शादी मुझसे। मैं भी तुम्हारे कपड़े नहीं दूँगा।"

लड़की बेचारी यह सुन कर बहुत ही परेशान हुई पर वह कुछ कर नहीं सकती थी। आखिर थक हार कर वह उस बन्दर से शादी

[15] Girl Who Married a Monkey – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern India, Asia.
Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

करने को तैयार हो गयी। शादी करने के बाद वह बन्दर उसको अपने घर ले गया।

जब बन्दर उस लड़की को अपने घर ले जा रहा था तो रास्ते में उस लड़की ने बन्दर से पूछा — "तुम मुझे खिलाओगे क्या?"

बन्दर बोला — "मैं तुम्हारे लिये लोगों के खेत से चावल चुरा कर लाऊँगा वही तुमको खिलाऊँगा।"

इस तरह वह लड़की बन्दर के साथ रहने लगी। बन्दर उस लड़की के लिये लोगों के खेतों से मक्का और चावल चुरा कर लाता था। वह उसी को पकाती थी और खाती थी।

वह लड़की उस बन्दर के साथ रहती जरूर थी पर वह हमेशा यही सोचती रहती कि किस तरह वह बन्दर के घर से भाग जाये।

एक दिन जब उसका बन्दर पति बाहर गया हुआ था तो उसने उसकी बूढ़ी माँ को जो उसी घर में रहती थी मार दिया। उसने उसकी खाल निकाल ली और खुद उसको पहन कर बैठ गयी।

जब बन्दर घर वापस आया तो उसने माँ को देख कर उससे पूछा — "माँ, मेरी पत्नी कहाँ है?"

उसकी पत्नी जो उसकी माँ बनी बैठी थी बोली — "बेटा, मुझे क्या मालूम तेरी पत्नी कहाँ है, कहीं भाग गयी होगी।"

यह सुन कर बन्दर पति बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "तुमको नहीं पता कि मेरी पत्नी कहाँ भाग गयी? अच्छा तो यह है कि तुम भी भाग जाओ।"

और उसने उसको डंडे से काई बार पीटा।

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई और बोली — "ठीक है, यदि तुम मुझे इस घर में नहीं देखना चाहते तो मैं अभी इस घर से चली जाती हूँ।"

और यह कह कर वह लड़की जितनी तेज़ भाग सकती थी उतनी तेज़ वहॉ से भाग ली।

भागते भागते वह अपने भाइयों के घर आ पहुँची और सारा हाल उसने अपने भाइयों को बताया। यह सब सुन कर उसके भाई भी बहुत गुस्सा हुए और बहिन के बन्दर पति को अपनी बन्दूक से गोली मारने चल दिये पर वह बन्दर पति उनको कहीं मिला ही नहीं सो वे उसको बिना मारे ही वापस लौट आये।

कुछ दिनों बाद उस लडकी के बच्चा हुआ। अब था तो वह बन्दर का बच्चा ही न, इसलिये वह बन्दर जैसा ही था।

लड़की के भाइयों को अपनी बहिन का यह बन्दर बच्चा फूटी ऑख नहीं भाता था। वे उसको मारना चाहते थे मगर लड़की का तो वह अपना बच्चा था इसलिये वह उनको उसे मारने नहीं देती थी।

धीरे धीरे वह बन्दर बच्चा बड़ा हो गया। एक दिन उसकी मॉ ने कहा — "मेरे बेटे, अब तू बड़ा हो गया है। अब तुझे जंगल चले जाना चाहिए और अपने पिता के पास ही रहना चाहिए।"

यह सुन कर वह बन्दर बच्चा जंगल चल दिया। वह पहाड़ियों के पास आराम करता था, पेड़ों पर चढ़ता था पर बोलता नहीं था।

जिस दिन वह बन्दर बच्चा जंगल की तरफ चला उसके जाने के कुछ देर बाद ही उसकी मॉ ने जिन मशीन से कपास साफ करनी शुरू की।

जब उस मशीन की आवाज बन्दर बच्चे के कानों में पड़ी तो वह बोला — "ओह मेरी मॉ अकेली कपास साफ कर रही है।" यह सोच कर वह बहुत दुखी हो गया और तुरन्त ही घर की तरफ दौड़ चला।

बन्दर बच्चे की मॉ को भी अपने बेटे की बहुत याद आ रही थी पर वह अपने भाइयों के डर से अपने बन्दर बच्चे को साथ रखने में डरती थी। सो जब उसका बेटा घर आया तो वह उसको देख कर तो बहुत खुश हुई पर फिर जंगल भेजने पर मजबूर हो गयी।

अगले दिन उसने फिर बन्दर बच्चे को जंगल भेज दिया और उस दिन उसने कपास साफ करने वाली मशीन नहीं चलायी। सो बन्दर का बच्चा भी जब पेड़ पर चढ़ा तो उसे जिन की आवाज नहीं सुनायी दी और वह फिर हमेशा के लिये जंगल की तरफ चला गया।

8 जादूगर नर[16]

एक बार की बात है कि लाइथा[17] नाम के एक आदमी ने शादी की। कुछ दिनों बाद उसको पता चला कि उसकी पत्नी मॉ बनने वाली थी तो यह सुन कर लाइथा बहुत खुश हुआ।

उन लोगों का चावल का खेत था सो वे लोग वहीं काम करते थे। लाइथा की पत्नी भी वहीं काम करती थी सो वे दोनों वहीं काम करते रहे।

एक दिन लाइथा की पत्नी जब खेत पर काम करने जा रही थी तो उसका बच्चा उसके पेट में से ही बोला — "मॉ, आज बहुत तेज़ बारिश होने वाली है पानी से बचने के लिये तुम खजूर का एक पत्ता साथ लेती जाओ।"

मॉ बोली — "तुम तो अभी मेरे पेट के अन्दर ही हो तुम्हें बारिश का क्या पता?"

उसने बच्चे की बातों पर ध्यान नहीं दिया और वह खेत पर काम करने चली गयी। वहॉ पहुँचने के बाद तो इतनी ज़ोर की बारिश हुई कि वह तो वहॉ सारी की सारी भीग गयी।

---

[16] The Magician Nar – a folktale from Lakher Tribe of North-Eastern part of India, Asia.
Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books. It is availabale on Internet.

[17] Liatha – name of the man

उसको यह सोच कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके पेट में बच्चे को कैसे पता चला कि आज इतनी ज़ोर की बारिश आने वाली है।

अगले दिन जब वह फिर खेत जाने के लिये तैयार हुई तो वह बच्चा फिर बोला — "मॉ, आज बहुत गरम होने वाला है, खेत पर अपने साथ पानी ले जाओ पीने के लिये।"

पर मॉ ने फिर वही जवाब दिया — "कल तो कितनी तेज़ बारिश हुई थी ओर आज तुम गरमी के बारे में बता रहे हो। तुम मौसम के बारे में इतना सब कैसे जानते हो, तुम तो अभी मेरे पेट के अन्दर ही हो?"

और वह खेतों को पीने का पानी लिये बिना ही चली गयी बल्कि वह खजूर का एक पत्ता साथ में ले गयी।

पर खेतों पर पहुॅचने पर वह खजूर का पत्ता तो काम नहीं आया क्योंकि उस दिन दिन वाकई बहुत गरम था पर हॉ क्योंकि वह पानी साथ में ले कर नहीं गयी थी इसलिये वह घर प्यासी जरूर लौटी।

कुछ दिनों बाद वह बच्चा पैदा हुआ। उसका नाम रखा गया नर।

खेतों पर इस समय फसल पक चुकी थी उसकी कटाई हो रही थी सो दोनों पति पत्नी खेत काटने में लगे हुए थे। वे नर को कहॉ छोड़ते इसलिये वे उसको अपने साथ ही खेतों पर ले जाते थे।

खेत पर ही उनका एक छोटा सा घर था उसके बरामदे में वे उसको लिटा देते थे और खुद खेतों में काम करते रहते थे।

एक दिन नर ने अपने ऊपर एक पतंग उड़ती हुई देखी। वह रो रही थी। उसको रोते देख कर नर ने उससे पूछा — "ओ पतंग, तुम क्यों रो रही हो? क्या आज बहुत बारिश होने वाली है? या फिर आज का दिन बहुत गरम होने वाला है?"

नर के माता पिता ने जो थोड़ी ही दूर पर काम कर रहे थे किसी आदमी के बात करने की आवाज सुनी तो उनको लगा कि घर में कोई आदमी है जो बोल रहा है सो नर का पिता ज़ोर से बोला — "कौन है, थोड़ा शान्त रहो। इतनी ज़ोर से मत बोलो मेरा बेटा जाग जायेगा।"

पर बच्चे ने पतंग से अपना सवाल फिर से किया तो पिता को फिर से बात करने की आवाज सुनायी दी। वह फिर बोला — "कौन है हमारे घर में जो इतना शोर मचा रहा है? मैं कह रहा हूँ कि शान्त हो जाओ और वह है कि सुनता ही नहीं।"

इतना कहते कहते वह घर की ओर दबे पॉव बढ़ा कि देखूँ तो वहॉ कौन है। पर वहॉ जा कर उसे सिवाय अपने बच्चे के और कोई भी दिखायी नहीं दिया।

उसने सोचा कि या तो उसको कुछ वहम हो गया था और वहॉ कोई था ही नहीं और अगर वहॉ कोई था भी तो लगता है कि वह भाग गया।

अगले दिन नर ने पतंग से फिर बात की तो नर के पिता ने फिर किसी के बात करने की आवाज सुनी।

अबकी बार वह घर की तरफ दबे पॉव बढ़ा कि देखूँ तो सही कौन है। पर वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो उसका अपना बच्चा ही बात कर रहा था।

यह देख कर उसको बहुत दुख हुआ और उसे डर लगा कि एक दिन उसका बेटा उसकी सारी जादुई ताकतें उससे ले लेगा क्योंकि वह तो खुद ही एक बहुत अच्छा जादूगर था।

सो इससे बचने के लिये उसने नर की जीभ का एक छोटा सा टुकड़ा काट लिया। लाइथा ने अपना जादू अपनी पीठ पर बने एक गूमड़[18] में रखा हुआ था जो उसके कन्धे की हड्डी के बिल्कुल नीचे था।

नर जब बारह साल का हो गया तो वह चिड़ियों का शिकार करने लायक हो गया था। एक दिन वह एक गली से जा रहा था कि वहॉ उसने एक लड़की को बैठे कपड़ा बुनते हुए देखा।

उसने उसको छेड़ना शुरू कर दिया। उसने उस लड़की की कपड़ा बुनने की शटल फेंक दी। यह सब उस लड़की को अच्छा नहीं लगा।

[18] Translated for the word “Bump”. It is a raised part on any part of body such as Koobad a hunchback has.

लड़की बोली — "मुझे तंग मत करो। यदि तुम मुझे तंग नहीं करोगे तो मैं तुम्हें बताऊँगी कि तुम असल में क्या हो।"

नर ने उसको तंग करना बन्द कर दिया और उससे पूछा — "अब बताओ मैं असल में क्या हूँ।"

वह लड़की बोली — "तुम्हारे पिता ने बचपन में ही तुम्हारी जीभ में से एक टुकड़ा काट लिया था ताकि वह तुम्हारा जादू ले सके।"

नर तुरन्त ही घर गया और पेट के दर्द का बहाना बना कर पड़ गया। उसके पिता ने उसके ऊपर बहुत से जादू किये पर उसका कोई जादू उसके पेट के दर्द पर काम नहीं कर सका।

फिर नर ने अपने पिता से कहा कि यदि वह उसको अपनी पीठ पर बिठा कर थोड़ी देर घुमा दे तो शायद उसके पेट का दर्द ठीक हो जाये।

उसके पिता ने उसको उठा तो लिया पर इस डर से कि कहीं वह उसका जादू न चुरा ले उसको अपनी जाँघ पर बिठा कर घुमाने लगा।

पर इससे तो नर का काम नहीं बनता था सो वह बोला — "पिता जी मुझे थोड़ा सा और ऊपर की तरफ कर लीजिये।"

अबकी बार उसके पिता ने उसको अपने सिर से भी ऊँचा कर लिया।

नर फिर बोला — "पिता जी अब मैं बहुत ऊपर हो गया। थोड़ा सा और नीचे।"

आखिर उसके पिता ने उसको अपने कन्धे पर बिठा लिया। जैसे ही वह पिता के कन्धे पर बैठा उसने पिता के गूमड़ में काट लिया और उस काटे हुए हिस्से को सारा का सारा निगल गया।

हालॉकि उसके पिता ने उससे बहुत कहा कि कम से कम वह थोड़ा सा जादू तो उसके लिये छोड़ दे पर उसने जवाब दिया — "पिता जी अब तो मैंने वह सारा का सारा निगल लिया।"

नर की अक्लमन्दी

जब नर और बड़ा हो गया तो उसने अपनी अक्लमन्दी और ताकत को जॉचना चाहा सो एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, आपको क्या लगता है सूअर के ज़्यादा पैसे मिलेंगे या चाव[19] के?"

उसके पिता ने कहा — "इसमें भी कोई पूछने की बात है, सूअर के पैसे ज़्यादा मिलेंगे।"

"देखते हैं" कह कर यह बताने के लिये कि चाव के पैसे ज़्यादा मिलेंगे वह चाव बेचने के लिये चला गया और अपने पिता को सूअर बेचने के लिये भेज दिया।

[19] Chaaw – a kind of an animal

लोगों ने सूअर खरीदने की तो हिम्मत नहीं की पर चाव क्योंकि सभी खाते थे इसलिये उसे हर आदमी थोड़ा थोड़ा लेना चाहता था। इस तरह चाव तो जल्दी खत्म हो गया पर उसके पिता का सूअर नहीं बिका।

नर ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, आप ठीक थे या मैं?"

उसके पिता ने जवाब दिया — "बेटा तुम ही ठीक थे। तुम तो टौसौ[20] हो। तुम तो जब अपनी मॉ के पेट में थे तुम तभी से बहुत अक्लमन्द हो।"

कुछ दिन बाद नर ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, अगर एक हिरन और एक चूहा दोनों सड़क पर भागे जा रहे हों तो लोग किसका पीछा करेंगे, हिरन का या चूहे का?"

उसके पिता ने तुरन्त जवाब दिया — "यह भी कोई पूछने की बात है लोग हिरन का पीछा करेंगे।"

नर ने अपने पिता को फिर से गलत साबित करने के लिये खुद तो एक चूहा सड़क पर छोड़ दिया और अपने पिता से एक हिरन छुड़वा दिया।

जैसे ही हिरन को छोड़ा गया वह तो तुरन्त ही भाग गया मगर जब चूहा छोड़ा गया तो उसे सबने देखा। वे सब उसके पीछे दौड़े, उसको पकड़ा और उसको मार दिया।

[20] Tawsaw

इस प्रकार नर ने यह फिर से साबित कर दिया कि वह सही था और उसका पिता गलत था पर नर के पिता ने उसे फिर से वही जवाब दिया जो उसने उसे पहले दिया था।

नर और नसाईपौ[21]

नर अब बहुत होशियार जादूगर हो गया था और अब वह किसी से डरता भी नहीं था। एक दिन नर का पिता एक गॉव के सरदार नसाईपौ से मिलने गया।

नसाईपौ भी एक बहुत बड़ा और होश्यिार जादूगर था। जब नर का पिता नसाईपौ के पास पहुॅचा तो नसाईपौ ने उससे पूछा — "तुम यहॉ तक मौत की नदी पार करके आये हो, है न?"

नर के पिता ने कहा — "हॉ, मैं मौत की नदी पार करके आया हूॅ।"

इसके बाद नसाईपौ ने बीयर खोली। उसमें से उसने खुद भी ली और नर के पिता को भी दी। जैसे ही नर के पिता ने बीयर चखी वह मर गया। नसाईपौ ने उस बीयर को नरक के पिता को देने से पहले ही उसके ऊपर जादू कर दिया था।

नर ने जब यह सुना कि नसाईपौ ने उसके पिता को मार डाला तो वह बहुत गुस्सा हो गया और उसने नसाईपौ से बदला लेने का विचार किया। वह नसाईपौ के गॉव चल दिया।

[21] Nasaipaw – the Chief of the village

नसाईपौ ने नर को अपने घर की तरफ आते देख लिया था तो उसने अपने जादुओं को बुलाया और उनको खाने पर, पूरे घर में और घर के दरवाजे पर तैनात कर दिया ताकि नर उसको कोई नुकसान न पहुँचा सके।

नर भी होशियार था। उसने भी यह सब दूर से ही देख लिया था।

नसाईपौ अपने घर के बाहर पहरा दे रहा था सो नर एक चूहा बन गया और रात के समय नसाईपौ के घर में एक छेद में से हो कर घुस गया। वह एक भट्टी के पास जा कर निकला और वहाँ जा कर वह फिर से आदमी बन गया।

थोड़ी देर में नसाईपौ अपने घर के अन्दर आया तो नर को घर के अन्दर देख कर हैरान रह गया। उसने पूछा — "तुम यहाँ अन्दर कैसे आये? क्या मौत की नदी से हो कर?"

नर बोला — "नहीं, मैं तो ज़िन्दगी की नदी से हो कर तुम्हारे घर चावल और मॉस खाने आया हूँ।"

नसाईपौ ने उसका स्वागत किया और अगले दिन सुबह नर के आने की खुशी में बीयर की एक दावत दी। उसने नर की बीयर की नली में जिससे वह बीयर पीने वाला था एक बड़ा सा सॉप घुसा दिया।

नर को भी पता चल गया कि उसकी बीयर पीने वाली नली में एक सॉप है सो उसने नसाईपौ को सामने वाले दो पहाड़ों की तरफ देखने के लिये कहा जो आपस में लड़ते से दिखायी दे रहे थे।

जब नसाईपौ उधर देख रहा था तो उसने खुद चील बन कर उस नली में से सॉप को बाहर निकाल कर फेंक दिया और वह फिर से नर बन कर बैठ गया।

उसने अपनी बीयर पीनी शुरू कर दी और नसाईपौ की बीयर पर जादू डाल दिया।

नसाईपौ ने अपनी बीयर पी तो उसके होठ बीयर पीने वाली नली से चिपक गये और उसका पेट बीयर के बरतन से चिपक गया।

अब तो वह हिल भी नहीं सकता था। थोड़ी देर में ही वह मर गया। नर ने उसका सारा सामान लिया, उसके सारे दास लिये और घर वापस आ गया।

नर की चीता आदमी से मुलाकात

एक बार नर मछली पकड़ने के लिये नदी पर गया। वहॉ उसने मछली पकड़ने के लिये नदी के ऊपर की तरफ जाल फेंका तो उसका जाल एक चीता आदमी[22] के जाल में फॅस गया क्योंकि उस

[22] Tigerman – the man who can change his shape both in Tiger and the human being

समय चीता आदमी ने भी अपना मछली पकड़ने वाला जाल नदी में फेंक रखा था। वह उसने नदी के नीचे की तरफ फेंका था।

नर ने चीता आदमी को मारना चाहा और चीता आदमी ने नर को खाना चाहा पर दोनों ही अपनी अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहे।

दोनों ने एक दूसरे के नाम पूछे। नर ने बताया कि उसका नाम नर था और चीता आदमी ने बताया कि उसका नाम कियाथ्यू[23] था। दोनों दोस्त बन गये और दोस्ती के तौर पर उन्होंने अपनी अपनी पकड़ी हुई मछलियॉ एक दूसरे से बदल लीं।

पर नर ने देखा कि कियाथ्यू की मछलियों के तो सिर ही नहीं थे क्योंकि कियाथ्यू ने जैसे ही अपनी मछलियॉ पकड़ीं वैसे ही उनके सिर खा लिये थे। वह चीता आदमी था न? सो नर को बिना सिर की मछलियॉ ही अपने घर ले जानी पड़ीं।

कियाथ्यू भी एक बहुत बड़ा जादूगर था। वह एक मधुमक्खी बन गया और नर के पीछे उड़ चला। नर भी पहचान गया कि कियाथ्यू उसके पीछे मधुमक्खी बना चला आ रहा था। जब नर घर पहुँचा तो उसने अपनी सारी मछलियॉ मॉ को दे दीं।

मॉ ने उनको देखते ही कहा — "अरे बेटा, आज यह कैसे हुआ कि आज जितनी भी मछलियॉ तुमने पकड़ीं उनका किसी का भी सिर नहीं है?"

[23] Kiatheu – name of the Cheetah Man

नर बोला —"मॉ, आज मैंने उन सबके सिर काट दिये थे और उनको पका कर खा गया हूँ।" उसकी मॉ यह सुन कर चुप हो गयी।

जब कियाथ्यू ने देखा कि नर ने अपनी मॉ को सच बात नहीं बतायी कि वह एक चीता आदमी का दोस्त बन गया था तो वह बहुत खुश हुआ और मन ही मन नर की तारीफ करते हुए अपने घर चला गया।

कियाथ्यू नर से बहुत खुश था सो एक दिन उसने नर को कहलवाया कि वह उससे मिलना चाहता था और वह बहुत खुश होगा अगर वह उसके पास आ कर कुछ दिन उसके पास ही ठहरे।

नर ने भी कियाथ्यू को कहला भेजा कि वह जरूर आयेगा और उसको अपने आने का दिन भी बता दिया।

कियाथ्यू के गॉव के सारे लोग चीता आदमी थे इसलिये उसने उन सब लोगों से कह दिया कि उसका एक दोस्त उससे मिलने आ रहा था इसलिये वे सब आदमियों की शक्ल में दिखायी देने चाहिये, चीते की शक्ल में नहीं।

नर अपने बताये दिन पर कियाथ्यू के गॉव आ पहुँचा।

नर ने आते ही पहला सवाल कियाथ्यू से यह पूछा — "मेरे दोस्त, तुम्हारे माता पिता कहॉ हैं?"

कियाथ्यू ने उसको टालने के लिये कहा — "मेरे माता पिता बहुत गरीब हैं और वे इस लायक नहीं हैं कि उनसे मिला जाये।"

नर बोला — "ऐसा नहीं हो सकता कि किसी के भी माता पिता चाहे वे कितने भी गरीब क्यों न हों कि वे मिलने के लायक न हों। तुम मुझे उनसे मिलाओ मुझे उनसे मिल कर बहुत खुशी होगी।"

जब नर ने बहुत जिद की तो कियाथ्यू ने नर को बता दिया कि वे कहॉ थे और फिर वह उसको उनसे मिलाने ले गया।

वे एक टोकरी में बैठे थे। नर ने उनको जब टोकरी में देखा तो वहॉ तो दो चीते बैठे हुए थे।

उन्होंने तुरन्त ही नर को काटने की कोशिश की तो तुरन्त ही नर ने कहा — "तुम्हारे माता पिता कितने सुन्दर हैं, कियाथ्यू।"

यह सुन कर कियाथ्यू के माता पिता बहुत खुश हुए और तुरन्त ही एक आदमी और एक औरत के रूप में आ कर नर के साथ बैठ गये।

नर ने उनको कुछ कपड़े दिये और उन लोगों ने नर के लिये एक दावत का इन्तजाम किया। नर के आदर में और उसके आने की खुशी में एक सूअर भी मारा गया।

कियाथ्यू के पास एक पेड़ था जिस पर बजाय फल और फूल लगने के बहुत सारे तरह के मोती लगते थे। उसने नर को वह पेड़ दिखाते हुए कहा कि वह उस पेड़ पर से जितने जी चाहे मोती ले सकता था।

नर ने **10** थैले मोती से भर लिये और फिर उनको अपने जादू के ज़ोर से थोड़े से मोतियों में बदल कर उनको अपने तम्बाकू वाले डिब्बे में रख लिया ताकि उनको ले जाने में आसानी हो।

नर कियाथ्यू के पास पॉच दिन रहा और फिर घर वापस आ गया। नर के वहॉ से चलने से पहले कियाथ्यू ने उसको सावधान कर दिया था कि जब वह घर जाये तो रास्ते में पॉच दिन तक कहीं न रुके। और यदि उसे टट्टी पेशाब भी जाना हो तो उसको वह खमीर[24] से ढक दे।

उसने नर को यह भी बताया कि — "मैं अपने गॉव वालों को बता दूँगा कि तुम अभी यहीं हो। मैं अपना ढोल भी पॉच दिन तक बजाऊँगा क्योंकि अगर उनको पता चल गया कि तुम यहॉ से चले गये हो तो वे तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हें खा जायेंगे।"

नर ने उसको उसकी इस सलाह के लिये धन्यवाद दिया और अपने घर चल दिया पर अपनी बेवकूफी की वजह से वह रास्ते में एक दिन के लिये रुक गया।

इधर जब नर को गये पॉच दिन बीत गये तब कियाथ्यू ने अपने गॉव वालों को बताया कि नर चला गया है। यह सुनते ही गॉव वाले नर के पीछे दौड़ पड़े।

[24] Translated for the word "Yeast"

मगर कियाथ्यू को डर लगा कि यदि कहीं रास्ते में किसी भी वजह से नर को रुकना पड़ा तो मुश्किल हो जायेगी इसलिये वह खुद भी उनके साथ ही भाग लिया।

कियाथ्यू का शक सही था। नर बीच में एक दिन के लिये रुक गया था सो उन लोगों ने नर को जल्दी ही पकड़ लिया।

नर को पहले ही पता चल गया कि गॉव वाले उसके पीछे आ रहे थे सो वह जंगली सूअर के इकट्ठे किये हुए पत्तों के एक ढेर में छिप कर बैठ गया।

कियाथ्यू को भी पता चल गया कि नर पत्तों के ढेर में छिपा हुआ था सो वह उसी पत्तों के ढेर पर बैठ गया और गॉव वालों को थोड़ी देर आराम करने को कहा। गॉव वाले भी आराम करने बैठ गये।

कुछ देर बाद वह उनसे बोला — "मेरे भाइयो, तुम लोग सबसे ज़्यादा किससे डरते हो?"

गॉव वाले बोले — "हम वही सोचते हैं जो तुम सोचते हो और हम भी सबसे ज़्यादा उसी से डरते हैं जिससे तुम डरते हो।"

कियाथ्यू बोला — "मैं अपनी बात बताऊॅ तुम्हें? मुझे लगता है कि मैं तो सबसे ज़्यादा बादल से डरता हूॅ। यदि बादल मेरे चारों तरफ आ जायें तो मैं तो बहुत ही डर जाऊॅ और जिस पत्ते के ढेर पर मैं बैठा हूॅ यदि उसमें से कोई बहुत ज़ोर की आवाज आ जाये तब तो मैं बहुत ही डर जाऊॅ।"

नर यह सब बातें सुन रहा था। उसने अपने जादू से चारों तरफ बादल फैला दिये और जितनी ज़ोर से वह चिल्ला सकता था उतनी ज़ोर से वह चिल्ला दिया।

चारों तरफ बादल देख कर और वह ज़ोर की आवाज सुन कर सारे चीता आदमी डर के मारे वहॉ से भाग लिये केवल कियाथ्यू रह गया। कियाथ्यू ने तो उनसे यह सब केवल इसी लिये कहा था ताकि वे लोग वहॉ से भाग जायें सो वो भाग गये।

उनके जाने के बाद कियाथ्यू ने नर से कहा — "तुमने यह क्या बेवकूफी की कि तुम रास्ते में रुक गये?"

नर बोला — "हॉ, वाकई यह मेरी बेवकूफी थी। मुझे माफ कर दो।"

फिर वह अपने घर वापस आ गया। वहॉ आ कर उसने अपने उन थोड़े से मोतियों को दस थैले मोतियों में बदल लिया और काफी सारे मोती उसने अपने दोस्तों में बॉट दिये।

नर का भाई

इसके बाद नर के बड़े भाई ने भी, जो थोड़ा सा बेवकूफ था, सोचा कि वह भी नर की तरह जायेगा और मोती इकट्ठे करके लायेगा। सो वह भी कियाथ्यू के गॉव की तरफ चल दिया। जब वह कियाथ्यू के घर पहुॅचा तो नर की तरह से उसने भी कियाथ्यू के माता पिता के बारे में पूछा।

कियाथ्यू ने उसको टालने के लिये कहा — "मेरे माता पिता बहुत गरीब हैं और वे इस लायक नहीं हैं कि उनसे मिला जाये।"

नर के भाई ने भी नर की ही तरह ही जवाब दिया — "दुनियॉ में किसी के भी माता पिता ऐसे नहीं हो सकते जिनसे न मिला जाये चाहे वे कितने भी गरीब क्यों न हों। तुम मुझे उनसे मिलाओ, मुझे उनसे मिलने में अच्छा लगेगा।"

जब नर के भाई ने बहुत जिद की तो कियाथ्यू उसको उनसे मिलाने ले गया पर जब उसने टोकरी में देखा तो वहॉ तो दो चीते बैठे हुए थे।

उनको देख कर वह डर गया और बोला — "मुझे तो डर लगता है।"

कियाथ्यू के माता पिता ने नर के भाई को झूठ मूठ काटने का बहाना किया पर यह सोच कर कि वह एक बेवकूफ है उसे माफ कर दिया।

कियाथ्यू ने नर के भाई को भी अपना वह पेड़ दिखाया जिस पर बजाय फल और फूलों के कई तरह के मोती आते थे और उससे कहा कि वह उस पेड़ पर से जितने चाहे उतने मोती ले ले।

नर के भाई ने उस पेड़ पर से जितने मोती वह आसानी से ले जा सकता था उतने मोती ले कर घर जाने को तैयार हुआ।

कियाथ्यू ने उससे भी कहा — "तुम सीधे घर जाना। रास्ते में कहीं रुकना नहीं नहीं तो मेरे गॉव वाले जो चीते हैं तुम्हारा पीछा

करेंगे और तुम्हें खा जायेंगे। मैं पॉच दिन तक ढोल बजाऊँगा और उस बीच में तुम अपने घर ठीक से पहुँच जाओगे।"

सुन कर नर का भाई अपने घर चला गया।

पर वह बेवकूफ रास्ते में दो दिन रुका। इसलिये कि वह मोतियों को एक साथ रखने के लिये धागा ढूँढता रहा। पॉच दिन के बाद कियाथ्यू के गॉव वालों ने उसका पीछा किया और उसको पकड़ लिया और खा लिया।

कियाथ्यू ने गॉव वालों से कहा — "तुमने मेरे दोस्त नर के भाई को खाया अब नर बहुत गुस्सा होगा। तुम उसको उगल दो।"

सारे चीतों ने मिल कर कियाथ्यू का कहना माना और नर के भाई को उगल दिया।

कियाथ्यू ने उसके शरीर के सारे टुकड़े जमा करके जोड़ दिये पर उसके शरीर का एक टुकड़ा एक बूढ़े चीते की दाढ़ में फॅसा रह गया। उस टुकड़े को वह किसी तरह भी नहीं निकाल सका।

इसलिये नर के भाई का शरीर पूरा नहीं हो सका और उसकी एक बगल में एक छेद रह गया। उस छेद को उन्होंने मधुमक्खी का मोम भर कर पूरा कर दिया और उसको घर भेज दिया।

नर का भाई जब घर पहुँचा तो उसने नर से कहा — "देखो, मैं भी थोड़े से मोती ले आया हूँ।"

पर नर ने कहा — "नहीं भाई, यह तुम नहीं हो यह तो तुम्हारी लाश है जो घर वापस आयी है क्योंकि चीतों ने तो तुम्हें खा ही लिया था।"

नर के भाई ने कहा — "नहीं, यह झूठ है। मैं तो अभी ज़िन्दा हूँ मुझे क्यों मरना चाहिये?"

नर बोला — "यदि तुम मेरी बात नहीं मानते तो तुम अपनी बगल देखो उसमें मधुमक्खी का मोम भरा है। अगर तुम इस मोम को निकाल दोगे तो ज़िन्दा नहीं रहोगे।"

नर के भाई ने जैसे ही वह मोम अपनी बगल से निकाला कि वह मरा हुआ जमीन पर गिर गया।

नर अपने भाई की मौत पर बहुत गुस्सा था उसने कियाथ्यू से पूछा — "तुमने मेरे भाई को क्यों मारा? अब हमको लड़ना पड़ेगा।"

कियाथ्यू ने जवाब दिया — "मैंने कुछ नहीं किया, मैंने तो उसको मोती भी दिये, उसको ठीक से रखा भी। तुम्हारे भाई की मौत उसकी अपनी गलती से हुई है पर इस पर भी यदि तुम लड़ना चाहो तो लड़ सकते हो मैं तैयार हूँ।"

लड़ने से पहले दोनों ने आपस में यह तय किया कि लड़ाई में जो भी मरेगा दूसरा आदमी उसके सिर को ट्रोफी की तरह से अपने घर के बरामदे में नहीं लगायेगा। हाँ, वह अपने शत्रु के ऊपर

जीतने की रस्म जरूर पूरी कर सकता है। और इस प्रकार वे दोनों लड़ने के लिये तैयार हो गये।

कियाथ्यू नर को नहीं देख पा रहा था और नर कियाथ्यू को नहीं देख पा रहा था। सो नर ने अपनी मोम की एक मूर्ति बनायी और उसको खेत में बने एक घर के चबूतरे पर रख दिया। उस मूर्ति को चबूतरे पर रख कर वह खुद उस घर के अन्दर अपना तीर कमान ले कर बैठ गया।

कियाथ्यू भी नर के पीछे पीछे गया और चबूतरे पर रखी मूर्ति को नर समझा और उसको मार डाला। जैसे ही कियाथ्यू ने नर की मूर्ति को मारा, नर ने उसे दो तीर मारे और घायल कर दिया।

कियाथ्यू नीचे गिर गया और लेटे लेटे नर से बोला — "मेरे दोस्त, तुम मुझसे ज़्यादा ताकतवर हो मैं तुमसे हार गया।"

और यह कह कर वह मर गया।

नर ने कियाथ्यू का सिर तो ले लिया पर उसने उसके एक दास को मार कर उस पर अपनी जीत की रस्म पूरी की।

अपने वायदे के मुताबिक उसने कियाथ्यू का सिर अपने घर के बरामदे में दूसरी ट्रोफियों के साथ नहीं टॉगा। इसी लिये आज भी लखेर जनजाति के लोग चीते या आदमी का सिर अपने घरों में नहीं लटकाते।

नर की मौत

इस घटना के बाद नर ने अनजाने में एक चीता लड़की वौरी[25] से शादी कर ली। वौरी जब नर घर पर नहीं होता था तो उसके दोस्तों को खा जाती थी।

उसके दोस्तों ने एक बार उससे कहा — "नर, तुम्हारी पत्नी चीता लड़की है। जब तुम नहीं होते तो वह हमको मार देती है और खा जाती है। तुमको उसे मार देना चाहिये नहीं तो एक दिन वह हम सबको खा जायेगी।"

यह सुन कर नर बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह वौरी को अपने हाथों से नहीं मारना चाहता था पर वह उस चीता लड़की के साथ रह भी नहीं सकता था।

सो एक दिन उसने बॉस के पानी भरने के एक बरतन में छेद कर दिया और अपनी पत्नी पर जादू डाल कर उससे कहा कि वह नदी से उस बॉस के बरतन में पानी भर लाये।

नर के जादू की वजह से वौरी उस बरतन का छेद नहीं देख पायी और उसने उस बरतन में पानी भरना शुरू किया।

जब वह पानी भर रही थी तो नर ने नदी पर अपना जादू फेंका। उसके जादू की वजह से उस नदी में ऊपर से बहुत सारा पानी आ गया और उसकी पत्नी को अपने साथ बहा कर ले गया।

[25] Vawri – name of the wife of Nar

जब नर उस पानी के बहाव का इन्तजार कर रहा था तो वह रो पड़ा। उसको रोते हुए देख कर उसकी पत्नी ने पूछा "नर, तुम क्यों रो रहे हो?"

नर बोला — "बहुत तेज़ बारिश आने वाली है तुम जल्दी से पानी भर लो और फिर घर चलो।"

कह कर उसने जादू के कुछ शब्द बोले और तुरन्त ही ज़ोर की बारिश, हवा और नदी का पानी सब एक साथ आ गये और वौरी को बहा कर ले गये।

यह सब देख कर नर बहुत दुखी हो कर अपने घर चला आया। वह इतना दुखी हुआ कि वह दस दिन तक कुछ खा ही नहीं सका।

उसके सम्बन्धियों को लगा कि वह अपनी पत्नी की वजह से बीमार हो गया है इसलिये उन्होंने उसको सलाह दी कि वहीं जा कर

अपनी जान दे दे जहॉ उसकी पत्नी की जान गयी थी।

नर यह सुन कर बहुत खुश हुआ उसने एक तुम्बा[26] और एक सूत लपेटने वाली एक अटेरन[27] ली और नदी की ओर चल दिया। उसने तुम्बा और अटेरन दोनों नदी में फेंक दीं

[26] Gourd – dry outer cover of any pumpkin type fruit or white gourd
[27] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

और बोला — "ओ तुम्बे और अटेरन, तुम तैर कर वहॉ जाओ जहॉ मेरी पत्नी है।"

तुम्बा और अटेरन तैरते हुए चले और समुद्र के पास आ कर रुक गये। इससे नर को पता चल गया कि उसकी पत्नी वहीं थी।

वह अपने आपको समुद्र में फेंकने जा ही रहा था कि उसने किनारे पर बहुत सारे सिपाही खड़े देखे। उसने उनसे कहा — "ओ छोटे बालों वाले विदेशियों, तुम मेरी तलवार ले लो।"

यह कह कर उसने अपनी तलवार पानी में फेंक दी। सिपाहियों ने वह तलवार पकड़ ली और रख ली और बोले — "ओ लाइथा के बेटे, तुम्हारी ताकत तो बिजली की तरह है।"

नर फिर बोला — "मैं अब पानी के अन्दर जा रहा हूॅ लेकिन उससे पहले जो कुछ मेरे पास है वह मैं बाहर फेंकना चाहता हूॅ – मेरी अक्लमन्दी, मेरी ताकत, मेरा जादू। जो कोई चाहे वह इन्हें ले सकता है।" और ऐसा कह कर उसने अपना सब कुछ बाहर फेंक दिया और पानी में कूद गया।

कहते हैं कि उन सिपाहियों ने अपनी अपनी पगड़ी फैला कर नर की सब चीज़ें ले लीं इसी लिये आज की सारी अक्लमन्दी, ताकत, जादू और लिखने की कला भी सब नर से ही आयी है।

SOME OTHER BOOKS ON FOLKTALES FROM ASSAM

BARKATAKI, Satyendra Nath (Compiler), and SAIKIYA, Candra Prasad (Editor)
Tribal Folk-tales of Assam (Hills). Gauhati, Assam, Publication Board. 1970. 237 pages. US$165/-
[Contains 129 folktales of tribes – Lushai, LAKHER, Pawi, Mikir,, Khasi,Jaintia, Dimasa Kachari, Thado-Kuki, Zemi-Naga, and Garo. Original from the University of Michigan; Digitized on 13 December, 2006]

BEZBAROA, Lakshminath
Tales of a grandfather from Assam. Bangalore, Institute of Culture, 1955. 135 pages
(Translated from the Assamese and illustrated by Aruna Devi Mukerjea)

BISWAS, Ranjita;
Folk Tales from Assam, Meghalaya and Arunachal Pradesh. Kindle Edition. 34 pages;
Kochi, Kerala; Mango Books. 2014. Indian Rs.70/- (contains 5 stories)

BOROOAH, Jnannadabhiram
Folk tales of Assam. 2nd ed. Gauhati, Assam, Lawyers Book Stall, 136 pages; 1955; US$18.66
(Some of the tales are from Lakshminath Bezbaroa, Assamese compilation)

GHOSH, GK and GHOSH, Shukla
Fablea and Folk-Tales of Assam; Calcutta, Firma KLM Pvt. Limited, 1998. Indian Rs.200/-
(Contains 50 stories born out of people like the Karbis, the Lalungs, the Dimasas and the Bodos)

Assam Ki Lok Kathayein – Hindi – Audio File free download / असम की लोक कथाएँ – हिंदी कहानियां मुफ्त ऑडियो डाउनलोड

This recording has been done by a student called Shreshtha Venkatraman. She found time to record all these stories, as part of the Esha Summer Project for children.

Tejimola ki Kahani
Jaulpaala aur Tualwungi
Ladki jo Bagh Ban Gayi
Mayur ki Utpatti
Saaluk Kunwar
Paan aur Supaari

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**